IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मांडना अंकन की परम्परा

डॉ ममता सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
एम.के.पी. (पीजी) कालेज
देहरादून

लोक कला में मांडना अंकन सदियों से हमारी संस्कृति का एक हिस्सा रहा है। यह कला हमारे तीज त्यौहारों, पर्वों व शुभ कार्यो (जैसे-शादी, पूजा आदि) पर घरों में मांगलिक संकेतों के रूप में अंकित की जाती है। त्यौहारों तथा पर्वों के अनुसार मांडना के स्वरूप में अन्तर देखा जा सकता है। यह अंतर क्षेत्रगत व जातिगत दृष्टिगत होता है। इसे बनाने का कार्य महिलाएं मुख्यतः करती है। जो बचपन से अपनी माँ व परिवार की अन्य महिलाओं को मांडना बनाते देख इस कला को आत्मसात् कर इसमें पारंगत हो जाती हैं। यह कलात्मक रूप इनके सधे हुए हाथों से त्रुटि रहित सीधे मस्तिष्क से धरातल पर गेरू व चूना से उकेर दिये जाते हैं।1यह आकृतियां ज्यामितीय, लयात्मक रूपों में सृजित की जाती है। इनमें पशु-पक्षी, फूल, लताएं व अन्य आकृतियों का सृजन अलंकरणात्मक रूपों को प्रस्तुत करते है। सम्पूर्ण राजस्थान में माँडना का चित्रण लोक सांस्कृतिक व पारम्परिक रूप में उपस्थित है। परन्तु हर क्षेत्र में भिन्नता होते हुए भी रंग व आकृतियों के संयोजन में समानता दृश्यमान होती है। राजस्थान में बनाये जाने वाले माँडनें मुख्यतः दो रंगों के संयोजन से अंकित किये जाते है। इनमें खड़िया के साथ कभी गेरू तो कभी पीली मिट्टी का प्रयोग किया जाता है। कई स्थानों पर रंगाकन सपाट अलंकरण रहित तो कहीं पर स्थान-भरण व फूल-पत्तियां, बेल-बूटों, कंगुरों आदि के माध्यम से अलंकृत किये जाते है। इसी प्रकार रेखांकन को कहीं पतला, तो कहीं मोटा बनाया जाता है।2

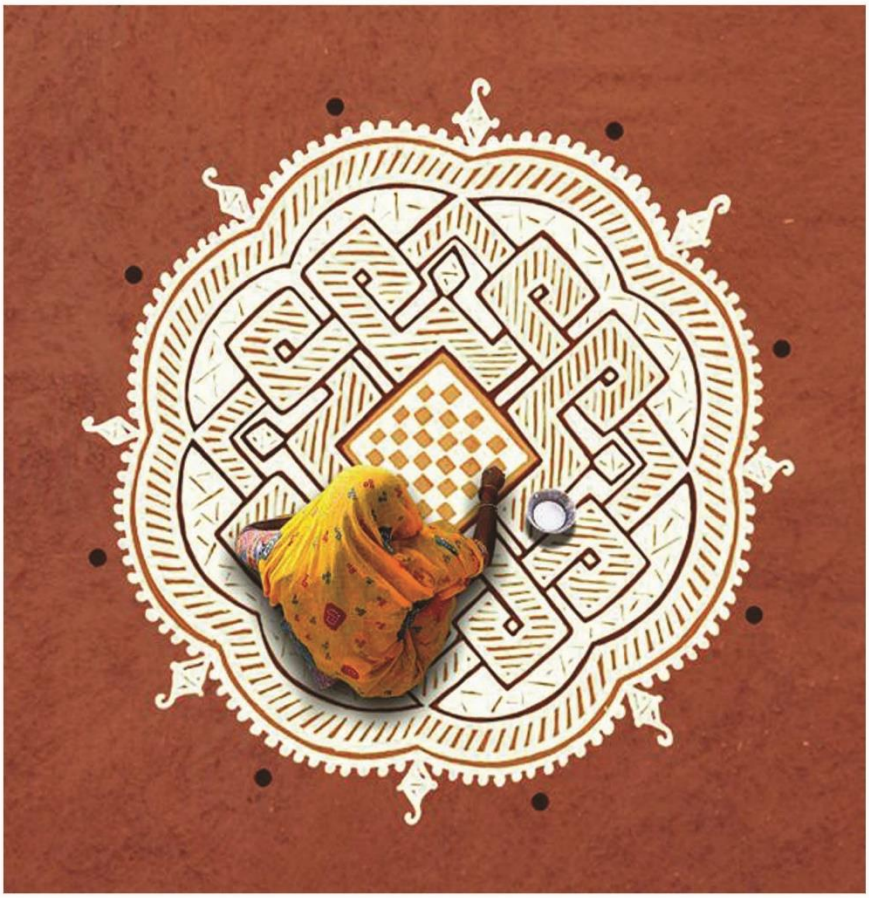

लोक चित्रण की यह परम्परा ग्रामीण समाज में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रखती है। गांवों में मान्यता है कि घरों की दीवारों को खाली छोड़ना अशुभ होता है तथा इसी कारण आंगन, दिवारों, चैखट आदि सभी स्थानों पर मांडना अंकन किया जाता है। यह आकृतियाँ शुभ मंगल का प्रतीक होती हैं। मांडना में विभिन्न आकृतियों का सम्मिश्रण या समावेश किया जाता है परन्तु आकृतियाँ गोल, चैकोर, त्रिभुजाकार तथा अन्य आकृतियों को मिलाकर रचना को साकार रूप प्रदान किया जाता हैं। जिससे उस रचना या मांडने का महत्व अधिक बढ़ जाता

है। साथ ही मांडने में त्यौहार, उत्सव,पर्व, रीति-रिवाजों के अनुरूप ही रूप प्रदान किया जाता है। अधिकांश माँडनों में फूल-पत्ती, दीये, पशु-पक्षी के मुख, पंख आदि का प्रयोग किया जाता है।3 ग्रामीण क्षेत्र में महिलाएं, रीति-रिवाजों के अनुसार मांडनों का प्रयोग व उपयोग करती है। इसमें स्थान का भी विशेष ध्यान रखा जाता है, कि कौन सा मांडना चौक के मध्य में और किस प्रकार से बनाया जायेगा। घर के बाहर की दीवार तथा अन्दर की दीवार पर किस प्रकार के मांडने का प्रयोग होगा। सीधी-साधी जीवन शैली पर आधारित मांडनों का स्वरूप दिखाई देता है परन्तु वर्तमान समयानुसार तथा आधुनिकता की झलक भी अब मांडनों में दिखाई देती हैं। सभ्य समाज तथ पढ़ी लिखी महिलाऐं व युवतियां अपनी सोच, ज्ञान के आधार पर भी इसमें कलात्मकता लाने की कोशिशे करती है। ग्रामीण अंचल व देहात की अधिकांश महिलाऐं इस कार्य को अपने सधे हुए हाथों से ही करती है। इसके लिए वह अपनी अंगुलियों का इस्तेमाल करती है, साथ ही रंगों का उपयोग रूई या कपड़े के फोहे तथा कई जगह बालों के गुच्छे के साथ रंगों को लेकर अंगुली तथा अंगूठे की सहायता से भावों को आकृतियों द्वारा अभिव्यक्ति प्रदान करती है।4

प्राकृतिक रंगों जैसे गेरू, खडिया के उपयोग द्वारा जब गोबर द्वारा लिपे हुए स्थान पर मांडना बनाये जाते है तो मन को एक सुखद आभास प्रदान करती है तथा मन को शान्ति प्रदान करती है। मन व मस्तिष्क में एक उत्साह व उमंग का अद्भूत संचार होता है। वर्तमान में मांडने को बनाने में ब्रश या कूंची का भी उपयोग किया जाने लगा है। परन्तु इसमें पारम्परिक मांडने का स्वरूप दिखाई नहीं देता है। इनमें कई स्थानों पर गेरू के स्थान पर पीली मिट्टी का प्रयोग किया गया हैं।5 सफेद चूना मिट्टी का प्रयोग माँडना अंकन में मुख्य रूप से देखा जाता है। अधिकांशतः माँडनों का प्रयोग समतल स्थल तथा आंगन के मध्य किया जाता है। अधिकांशः माँडनों का सम्पूर्ण स्वरूप गोल या चोकोर आकृति

लिए हुए होते हैं। कुछ माँड़ने के स्वरूप में दरवाजे के ऊपर की ओर पट्टिनुमा आकृति लटकती हुई सी बनाई जाती है। जो दरवाजे के मध्य भाग तक होती है तथा मध्यभाग के अन्तिम छोर पर चोकोर आकृति का चित्रण कर दो या तीन पट्टिनुमा आकृति का चित्रण कर इसे पूर्ण कर दिया जाता है। इसके लिए चूने के रंग युक्त मिट्टी का प्रयोग भी किया जाता है।6 वर्तमान समय में मांडना स्वरूपों में बाह्म प्रभाव देखा जा सकता है। इस मांडने में रंगों व आकृति दोनों ही मूल रूप से अलग प्रकट की गई है। यहाँ बच्चों की चित्र पुस्तिकाओं में बनाये जाने वाले फूल व गमले का प्रयोग भित्ति अलंकरण के रूप में हुआ है तथा रंगाकंन में गेरू व खड़िया के स्थान पर अन्य रंगों का प्रयोग किया गया है।7 चित्र में सम्पूर्ण घर को माँडना के स्वरूपों से अलंकरण रूप प्रदान किया गया है। घर के द्वारों व आल्यों, रोशनदान व आँगन की भित्तियों को सपाट पट्टिनुमा आकृतियों के संयोजन से सुन्दर रूप दिया गया है। द्वार के दोनों ओर ज्यामितीय कोंणीय आकृतियों को सीढ़ीनुमा क्रम में लगाया गया है। जिनके उपरी कोण पर तीन पत्तियों से अलंकरण किया गया है। दीवार के बीच में भी कोणीय आकृतियों को उठते-उठते क्रम में लगते हुए सम्पूर्ण घर को अलंकरणात्मक स्वरूप प्रदान किया गया है। चित्र में सम्पूर्ण भित्ति को माँडना स्वरूप के माध्यम से अलंकरणात्मक रूप दिया गया है।8 यहाँ गेरू, पीली मिट्टी तथा सफेद चुना मिट्टी का प्रयोग एक साथ किया गया है। माँडना में प्रयुक्त मूल स्वरूपों को कुछ अलग व सरलतम रूप में बनाकर उसके मध्य में बेल, फूल, पत्ते, मोर आदि आकृतियों का संयोजन किया गया है।9 भारत में विरासत को सहेजने का काम महिलाऐं वर्षों से करती आ रही हैं। पीढ़ीदर पीढ़ी परम्पराओं के पालन का दायित्व निर्बाध रूप से महिलाओं ने किया हैं। भारत के विभिन्न राज्यों में विविध लोक संस्कृति पर्वों और उत्सवों पर दिखाई देती है। लोक कला के विभिन्न रूप चित्र, मूर्ति, परिधान, आभूषण, गीत-संगीत, नृत्य आदि के माध्यम से परिलक्षित होते है। लोक कलाएँ भावनाओं की अभिव्यक्ति का सशक्म माध्यम है। माँडना कला भी भारत के राजस्थान क्षेत्र की समृद्ध लोककला का परिचायक है।

संदर्भ सूची-

1-कंचन कोठारी - दादी माँडना पत्रिका प्रकाशन - 2013
2- गुलाब कोठारी - राजस्थान की ग्रामीण कला में राज0 हि0 ग्रन्थ अकादमी।
3- प्रेमचन्द गोस्वामी - मनोहर माँडना राज0 हि0 ग्रन्थ अकादमी।
4- कमलेश माथुर - पारम्परिक कला एवं लोक संस्कृति।
5- भवानी शंकर शर्मा- लोककला में माँडने।
6- प्रेमचन्द गोस्वामी - मनोहर माँडना राज0 हि0ग्रन्थ अकादमी।
7,8,9 - स्वंय भ्रमण के आधार पर (IJCRT_210852)